भारतीय कला में महिषासुरमर्दिनी प्रतिमाएँ

डॉ. मुक्ति मिश्रा

अतिथि विद्वान,

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व,

रानी दुर्गावती विष्वविद्यालय,जबलपुर

दुर्गा का एक रूप महिषासुरमर्दिनी है। उनके इस स्वरूप का उल्लेख देवीभागवत कथा मार्कण्डेय पुराण में विस्तार से किया गया है। इस कथा[1] के अनुसार महिषासुर नामक दैत्य देवी के समक्ष विवाह प्रस्ताव रखता है, जिस पर देवी कहती है कि अरे! मूर्ख मैं तुम्हारा नाष करने आई हूँ अतः तेरे लिए हितकर होगा कि तू पाताल भाग जा या मुझसे युद्ध कर। देवी द्वारा बार–बार तिरस्कार करने पर महिषासुर ने उन पर बाणों से प्रहार प्रारंभ कर दिया, जिसे देवी ने निष्फल कर दिया। क्रोध में आकर महिषासुर ने गदा से देवी के वाहन सिंह पर प्रहार किया, सिंह ने महिषासुर को अपने नखों से चीर देने के लिए उस आक्रमण किया, अब असुर ने हाथी का रूप धारण कर लिया और एक पर्वतखंड को देवी की ओर फेंका, जिसे देवी ने बाणों से खंड–खंड कर दिया। अब सिंह हाथी के मस्तक पर चढ़ गया और उसे नखों फाड़ने लगा तब हाथी का रूप त्याग कर असुर ने भयानक षरभ का रूप धारण कर लिया और कुपित होकर सिंह को मारने का प्रयास करने लगा देवी ने 'षरभ वेषधारी असुर पर खड्ग से प्रहार किया। महिषासुर ने पुनः महिष का रूप ले लिया। देवी और असुर के मध्य भीषण संग्राम होने लगा, कुपित होकर देवी ने अपना चक्र निकाला और महिषासुर का मस्तक षरीर से पृथक कर दिया। इस प्रकार महिषासुर का अंत हुआ और देवी महिषासुरमर्दिनी कहलाई।

मार्कण्डेय पुराण के देवी महात्म्य की कथा कुछ भिन्न है इस कथा के अनुसार भीषण युद्ध में देवी महिषासुर पर बलपूर्वक चढ़ गईं और त्रिषूल से प्रहार किया महिषासुर पर देवी का बल पड़ने के कारण महिष स्वरूप से आधा असुर बाहर निकल आया और देवी ने उस पर प्रहार किया अपनी खड्ग से उसका मस्तक षरीर से पृथक कर दिया और महिषासुर का अंत हुआ।

महिषासुरमर्दिनी दुर्गा का उग्र रूप है जिसमें वह असुर का संहार करते हुए प्रदर्षित की गई है। विभिन्न षिल्पषास्त्रीय ग्रंथों में देवी के इस स्वरूप का विस्तार से वर्णन किया गया है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में देवी को चामुण्डा या चंडिका के नाम से संबोधित किया गया है, पुराण के अनुसार देवी के दांयी ओर की भुजाओं में षूल, खड्ग, षंख, चक्र, बाण, षक्ति, वज्र, अभयमुद्रा, डमरू एवं छत्र तथा बांयी ओर की भुजाओं में नागपाष, खेटक, परषु, धनुष, अंकुष, ध्वजा, गदा, दर्पण और मुद्गर होना चाहिए। देवी की आकृति के

नीचे मस्तकविहीन महिष पड़ा हो जिससे मानव रूपी असुर बाहर निकलता हुआ अंकित होना चाहिए।[2] अपराजितपृच्छा और रूपमंडन में देवी को दषभुजी और सिंहवाहिनी वर्णित किया गया है उनकी भुजाओं में घंटा, पाष, खेटक का अंकन अनिवार्य बताया गया है।[3]

गुप्तकाल स्थापत्य एवं मूर्तिकला का भी स्वर्ण युग रहा है। इस काल में जहाँ स्थापत्य की अभूतपूर्व उन्नति हुई तथा मंदिरों का निर्माण प्रारंभ हुआ वहीं मंदिरों को अलंकृत करने के लिए मूर्तियों के निर्माण का भी विस्तार हुआ। देवप्रतिमाओं के निर्माण के नियम भी निष्चित हुए। इस काल के प्रमुख स्थलों में जबलपुर के पास स्थित सिंदूर्सी गुप्तकला का प्रारंभिक स्वरूप व्यक्त करता है। सिंदूर्सी की चट्टानों पर विष्णु, नरसिंह, षेषषायी विष्णु के साथ ही महिषासुरमर्दिनी का भव्य रूप दृष्टिगोचर होता है। देवी प्रतिमा के इस स्वरूप में वह चतुर्भुजी हैं। उनके दांयी ओर की भुजा में त्रिषूल और खड्ग तथा बांई ओर की भुजा में ढाल तथा नीचे वाली भुजा से महिष पूछ से उसे ऊपर उठाते हुए दिखाई गईं हैं। देवी का दांया पैर महिष के मुख पर स्थित है जिस पर वह बल देकर पददलित कर रही है। देवी के इस स्वरूप में महिष का मुख भूमि से लगा हुआ तथा उसका षरीर पूछ के बल से हवा में लटका हुआ है, महिष के पीछे के पैर अधर में है तथा आगे के पैर भूमि पर घसिट गए है। देवी बलपूर्वक महिष की पीठ पर त्रिषूल से प्रहार कर रही है। देवी के षीष पर पगड़ीनुमा मुकुट प्रदर्षित किया गया है, गले में हार तथा भुजाओं में कंगन का अलंकरण से अलंकृत है।[4]

उत्तर भारत के सामान ही दक्षिण भारत में ही देवी महिषासुरमर्दिनी स्वरूप अत्यंत लोकप्रिय प्रतीत होता है। दक्षिण भारत के गुहाओं, मंदिरों में यह स्वरूप अपने संपूर्ण कथानक तथा कलापूर्ण सौंदर्य के साथ सभी राजवंषों की कला में प्रमखता के साथ प्रदर्षित किया गया है। देवी का यह आकर्षक रूप बादामी की गुहाओं में प्रभावयुक्त षैली में उत्कीर्ण है, ऐसी ही एक प्रतिमा गुहा संख्या 01 में अंकित है, इस प्रतिमा में देवी चतुर्भुजी हैं, उनकी ऊपरवाली बांई भुजा में षंख तथा दांई भुजा में चक्र है, चक्र खंडित अवस्था में है परंतु अवषेष के आधार पर चक्र का अनुमान लगाना सहज है। देवी के नीचे की दांई भुजा में त्रिषूल तथा बांई भुजा से महिष की पूंछ पकड़कर उसके 'षरीर को ऊपर उठाए हुए है, महिष के पीछे के दोनों पैर ऊपर उठे हुए हवा में है देवी का बांया पैर महिष के मस्तक पर उसे पददलित करते हुए प्रदर्षित है, वे त्रिषूल से महिष पर प्रहार नहीं कर रही है, इस दृष्य में देवी महिषासुर को नियंत्रित कर अपने बल का परिचय दे रहीं हैं।[5]

महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा का एक सुंदर एवं आकर्षक स्वरूप बादामी की गुहा संख्या 03 में चित्रित है। प्रतिमा का कथानक तो असुर का वध ही है परंतु उसकी अभिव्यक्ति अत्यंत आकर्षक रूप से कलाकार ने की है। इस प्रतिमा में देवी अष्टभुजी है उनके दांई ओर की भुजाओं में से एक में त्रिषूल उसके बाद वाली भुजा में अंकुष है षेष दो भुजाओं के आयुध अस्पष्ट हैं। बांई ओर की भुजाओं में से एक में धनुष एक में षंख और एक में ढाल है। देवी एक हाथ से महिष का मुख बंद करते हुए पकड़े हैं उनका बांया पैर घुटने से मुड़ा हुआ है और महिष की ग्रीवा को बलपूर्वक दबाते हुए उत्कीर्ण है। देवी अंकुष की सहायता से उसकी पीठ पर प्रहार कर रही है उनके मुख पर असुर संहार की संतुष्टि का भाव एवं प्रसन्नता स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रही है, इन भावों को प्रदर्षित करने में षिल्पी की कुषलता एवं कलाप्रवीणता झलकती है। कलकार संपूर्ण दृष्य में असुर के संहार तथा उसके अत्याचारों के अंत करने के भाव को तथा देवी की वीरता और संसार को सुरक्षित करने के भाव का अंकन भव्य और भक्ति से परिपूर्ण रूप में व्यक्त करने में समर्थ है।[6]

ऐहोल के रावणफाडी गुहा मंदिर में उत्कीर्ण महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा बड़ी ही प्रभावषाली है। इस प्रतिमा में देवी अष्टभुजी हैं। उनके दांए ओर की भुजाओं में त्रिषूल, चक्र, भाला एवं खड्ग है। देवी की बांई ओर की चार भुजाओं में एक ही भुजा सुरक्षित है जिसमें वे घंटा लिए हुए है। एक अन्य भुजा जो खंडित है उसका आयुध षंख सुरक्षित है। देवी महिषासुर की पीठ पर बलपूर्वक प्रहार कर रही है जिससे वह वेदना से कराहते हुए मुख ऊपर किए देवी की ओर देख रहा है। देवी के दांए पैर के पास उनका वाहन सिंह है जो असुर के संहार को प्रसन्न मुद्रा में देख रहा है। देवी के षीष पर अलंकृत किरीट मुकुट सुषोभित है गले में हार तथा दीर्घ माला उनके उदर तक फैली है। देवी के हाथों में केयूर तथा कलाईयों में चौड़े आकर्षक कंगनों का अंकन प्रतिमा को सुषोभित एवं अलंकृत कर रहा है। देवी के मुख पर षांत भाव एवं मंद मुस्कान है। उनके षीष के पीछे पुष्प अलंकरण का प्रभामंडल है जो देवी के स्वरूप को दिव्यता प्रदान कर रहा है। संपूर्ण दृष्य भक्तों के उद्धार एवं असुरों के अत्याचार को समाप्त करने का संदेष प्रसारित कर रहा है।[7]

महिषासुरमर्दिनी की एक आकर्षक एवं अद्भुत प्रतिमा जो काले पाषाण से निर्मित है ब्रिटिष संग्राहालय में सुरक्षित है, इस प्रतिमा में देवी अष्टभुजी है उनकी दांई ओर वाली सबसे ऊपर की भुजा में खड्ग है जो उनके षीष के पीछे लहरा रही है इस भुजा के नीचे वाली भुजा में सर्प है। इसी ओर की तीसरी भुजा में अंकुष है प्रतिमा की चौथी भुजा खंडित है। बांए ओर की ऊपर वाली दो भुजाएँ खंडित है जिनमें से एक में षूल है जो प्रतिमा में अवषेष के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। दूसरी भुजा में धनुष हो सकता है क्योंकि देवी के बांए कंधे पर तुरीण दिखाई दे रहा है। महिषासुरमर्दिनी की यह प्रतिमा अद्वितीय है इसमें देवी असुर का वध करने के पूर्व उसे नियंत्रित करते हुए प्रदर्षित है। देवी की बांई ओर की

सबसे नीचे वाली भुजा में पाष है जो महिष की ग्रीवा को कसे हुए है। देवी के दांए ओर की भुजा में अंकुष है जिससे देवी असुर की नासिका को पकड़कर उसमें नकेल डाल रही है। बांई ओर की एक भुजा में षूल है जिससे देवी असुर के वक्षस्थल पर प्रहार कर रही है। देवी का दांया पैर महिष की पीठ पर स्थित है। देवी ने महिष का सर काट दिया है जो भूमि पर पड़ा है। असुर महिष के 'षरीर से बाहर निकलकर देवी पर प्रहार को आतुर है उसके दांए हाथ में तलवार तथा बांए हाथ ढाल है। असुर की कटि पर लटकती हुई कटार का अंकन है। देवी का वाहन सिंह महिषासुर के पैर पर काटकर उसके प्रहार की क्षमता को विफल करने का प्रयास कर रहा है। असुर के सिर पर अलंकृत मुकुट, कुंडल, गले में हार हाथों में केयूर और कड़ा धारण किए हुए है यह अलंकरण उसे असुरराज के रूप में प्रकट कर रहे हैं।[8]

महिषासुरमर्दिनी की एक प्रभावषाली प्रतिमा जो अष्टभुजी है भारतीय कला का अनुपम उदाहरण है। इस प्रतिमा में देवी दांई ओर की भुजाओं में सबसे ऊपर वाली भुजा में खड्ग है इसके नीचे की भुजा में त्रिषूल है जिससे वह असुर पर प्रहार कर रही है इसके पष्चात की भुजाओं में वज्र और षक्ति है इस ओर की सबसे नीचे वाली भुजा में बाण है। देवी की बांई ओर सबसे ऊपरवाली भुजा में ढाल है दूसरी भुजा महिष के मुख पर स्थित है जिसे वह बलपूर्वक नीचे की ओर दबा रही है उनके बल के कारण महिष का मुख चीत्कार कर खुल गया है और उससे महिष की जीह्वा बाहर निकल आई है महिष की यह स्थिति उसकी वेदना को प्रकट कर रही है। देवी नीचे वाली भुजा में धनुष धारण किए हुए है सबसे नीचे वाली भुजा का अंकन अद्भुत एवं विस्मयकारी है इस भुजा में देवी सर्प लिए हुए है जो महिष के खुले मुख से निकलती हुई जिह्वा को डसने के लिए लालायित हो मुख खोले हुए है। जीह्वा तक पहुँचने के लिए सर्प गतिमान दृष्टिगोचर होता है। इस प्रतिमा में महिष का स्वरूप अर्धमानव का है। असुर का षीष महिष का है तथा षेष षरीर मानव का है। असुर पैर मोड़कर भूमि पर बैठा है उसका दांया हाथ घुटने पर स्थित है जिसमें वह कोई वस्तु पकड़े है जिसे निष्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि वह क्या है? असुर का बांया हाथ कटि पर स्थित है जिसे देवी का वाहन सिंह काट रहा है। देवी अन्य अनेक आभूषणों से सुसज्जित है।[9]

महिषासुरमर्दिनी की एक अतिविषिष्ट प्रतिमा महाबलिपुरम की महिषमर्दिनी मण्डप में उत्कीर्ण है। इस प्रतिमा में देवी और महिषासुर के मध्य युद्ध को कथानक के रूप में कलाकारों ने प्रदर्षित किया है। इस आयाताकार प्रतिमा पट्ट में असुर एवं देवी की सेनाओं के मध्य युद्ध को दिखाया गया है। महिषासुर और देवी दोनों को ही छत्रयुक्त अंकित कर उनकी स्थिति प्रभावषाली प्रदर्षित की गई है। देवी अष्टभुजी है, तथा षरसंधान की मुद्रा में है, उनकी दाईं ओर एक भुजा में खड्ग है। असुर पलायन की मुद्रा में दृष्टिगोचर हो रहा है साथ ही वह पीछे मुड़कर देवी के बाण को अपनी ओर आते देखा रहा है। असुर के दांए हाथ में मुगदर है जिसका अग्र भाग उसके बांए हाथ में स्थित है। असुर का स्वरूप अर्धमानव का है। उसका षीष

महिष का एवं षेष षरीर मानव का है। असुर के पलायन को देखकर उसकी सेना भी भाग रही है। यह प्रतिमा देवी और असुर के संग्राम को प्रदर्षित करती है जिसका अर्थ है कि महिषासुर देवी से युद्ध करने के पष्चात पराजित हुआ और देवी ने उसे पददलित कर उसका संहार किया। संपूर्ण दृष्य भीषण संग्राम को अंकित करता है, कलाकार ने युद्ध का जीवंत दृष्य उत्कीर्ण किया है। इसी प्रकार की एक प्रतिमा कैलाषनाथ की गुफा संख्या 21 में भी उत्कीर्ण है। एक अन्य अंकन में इसी दृष्य की पुनरावृत्ति है अंतर इतना ही है कि असुर संपूर्ण मानव रूप में है तथा उसके सिर पर सींगों का अंकन कर महिष का रूप प्रदान किया गया है। इस प्रतिमा में असुर पलायन करने के स्थान पर अपनी गदा से संपूर्ण षक्ति का प्रयोग करते हुए देवी पर प्रहार को आतुर है देवी षरसंधान की मुद्रा में हैं।[10]

खजुराहो में महिषासुरमर्दिनी की कुल सात प्रतिमाएँ उपलब्ध हैं, जो लक्ष्मण मंदिर, कंदरिया महादेव मंदिर, चौसठ योगिनी मंदिर और स्थानीय संग्राहलय में है, देवी की यह प्रतिमाएँ चतुर्भुजी, षटभुजी, अष्टभुजी एवं बीसभुजी हैं। लक्ष्मण मंदिर के गर्भगृह के प्रदक्षिणा पथ पर देवी का अष्टभुजी स्वरूप दिखाई देता है। देवी सौम्यस्वरूपा होते हुए भी पूरी तरह गतिषील हैं और त्रिषूल से महिष की गर्दन पर प्रहार कर रही है। देवी का वाहन सिंह भी तीव्रता से महिष पर आक्रमण करता हुआ अंकित है। देवी के दांयी ओर के ऊपर वाली भुजा में खड्ग, उससे नीचे वाले में चक्र तथा उसके बाद वाले हाथ में षक्ति अंकित है। इस षक्ति के षीर्ष भाग पर मुखाकृति निर्मित है। देवी के सबसे नीचे वाले हाथ में त्रिषूल है। बांयी ओर की एक भुजा खंडित है इस ओर सबसे ऊपर वाली भुजा में ढ़ाल, उसके बाद वाली भुजा में घंटा तथा उसके बाद वाली भुजा खंडित है। सबसे नीचे वाली भुजा में वह त्रिषूल का षेष हिस्सा पकड़े हैं इस प्रकार नीचे के दोनों हाथों से त्रिषूल द्वारा महिषासुर पर प्रहार कर रहीं हैं।

कंदरिया महादेव मंदिर के महामंडप की अंतःभित्ति पर उत्कीर्ण देवी दसभुजी हैं जिनके नीचे के दोनों भुजाओं में त्रिषूल है। उनके दांयी ओर की भुजा में षक्ति है तथा चक्र, बाणयुक्त तुरीण, खड्ग और घंटा है। बांयी ओर की भुजाओं में एक में ढाल तथा एक खंडित है उनके दांए पैर के नीचे विषालकाय महिष पड़ा है जिस पर देवी त्रिषूल से प्रहार कर रही है। इस प्रकार महिषासुर के वध की कथा को साकार रूप दिया गया है।[11]

महिषासुरमर्दिनी की एक अद्वितीय प्रतिमा रानी की बाव बावड़ी में सुरक्षित है। इस प्रतिमा में देवी बीसभुजी है। देवी की दांए ओर की सबसे ऊपर वाली भुजा में खड्ग है तथा तीसरी भुजा अभयमुद्रा में है उसके बाद की भुजा में डमरू और फिर क्रमषः गदा, षक्ति, मुगदर, बाण, वज्र तथा एक भुजा से त्रिषूल पकड़े हैं। देवी की बांई ओर की दस भुजाओं में सबसे ऊपरवाली में ढाल फिर क्रमषः पात्र, घंटा, सर्प हैं। इस ओर की दो भुजाओं के आयुध की पहचान संभव नहीं हो पा रही है अतः षेष में धनुष और पाष है। देवी

की एक भुजा असुर के केष पकड़े हुए है सबसे नीचे वाली भुजा से त्रिषूल द्वारा असुर का संहार कर रही है। देवी का दांया पैर महिष की पीठ पर है जिस पर बलप्रयोग को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। महिष की ग्रीवा आधी कटी है जिससे असुर मानव रूप में बाहर निकल रहा है। असुर का दायां पैर महिष के मस्तक पर तथा बांया पैर कटी हुई ग्रीवा पर स्थित है। असुर की यह स्थिति पषु के अंदर से निकलने की व्याग्रता का सुंदर प्रदर्षन है। असुर के दांए हाथ में तलवार है जिससे वह प्रहार करने को तत्पर दिखाई दे रहा है। देवी का त्रिषूल उसकी पीठ पर धसा हुआ है। महिष पर पीछे से देवी का वाहन सिंह प्रहार कर रहा है उसके आगे के दो पैर महिष की पीठ पर है तथा वह उसे अपने संपूर्ण बल से और नुकीले दांतों से काट रहा है। पषु की गतिषीलता व उसका स्वभाविक क्रियाकलाप के अंकन में कलाकार ने अपनी संपूर्ण प्रतिभा कौषल का प्रदर्षन किया है। देवी का मुखमंडल पर मंद मुस्कान असुर संहार की संतुष्टि प्रसन्नता के भाव स्पष्ट रूप से देखे जा सकते है। देवी के षीष पर जटा मुकुट षोभायमान है। कर्णों में विषाल कुंडल, ग्रीवा में हार एवं तीन मोतियों की लड़ी का माला है। देवी की भुजाएँ केयूर और कंगन से सुसज्जित हैं। कटि पर सुंदर कटि सूत्र धारण किए हुए है। देवी के अलंकरण उन्हें प्रभावषाली और सौंदर्य से परिपूर्ण बना रहे हैं। संपूर्ण दृष्य महिषासुर के संहार की कथा को साकार रूप देने में पूर्णतः समर्थ है। षिल्पियों ने देवी की बीस भुजाओं का अभूतपूर्व समायोजन किया है और इस कार्य में उन्होंने अपनी संपूर्ण प्रतिभा का परिचय दिया है।[12]

उपर्युक्त महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमाएँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों से उपलब्ध हैं। इन प्रतिमाओं की लोकप्रियता इस बात से सिद्ध होती है कि इन्हें बारंबार और कथा के प्रत्येक पक्ष को तत्कालीन षिल्पियों ने प्राथमिकता के साथ अंकित किया है। इन प्रतिमाओं और कथाओं के माध्यम से भारतीय मनिषीयों ने दंड़ और न्याय की स्थापना का प्रयास किया है। दुर्गा के विभिन्न स्वरूप सभ्यता की विकास यात्रा में नारी के उत्तरदायित्व, समाज को अनुषासित करने की षक्ति तथा अन्याय के विरूध सषक्त नारी की भूमिका को प्रदर्षित कर आदर्ष समाज एवं सभ्यता को व्यवस्थित करने का सफल प्रयास किया है।

चित्र क्रमांक 1

चित्र क्रमांक 2

चित्र क्रमांक 3

चित्र क्रमांक 4

चित्र क्रमांक 5

चित्र क्रमांक 6

चित्र क्रमांक 7

चित्र क्रमांक 8

चित्र क्रमांक 9

संदर्भ

[1] देवी भागवत का अध्याय, 18–19।

2 विष्णुधर्मोत्तर पुराण 117/16–2.26

3 तिवारी, मारूतिनंदन एवं गिरि कमल, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण पृ.131.

4 चित्र संख्या 1

5 चित्र संख्या 2

6 चित्र संख्या 3

7 चित्र संख्या 4

8 चित्र संख्या 5

9 चित्र संख्या 6

10 चित्र संख्या 7

11 देव, कृष्ण, टेंपल्स ऑफ खजुराहो, पृ.28

12 चित्र संख्या 9